P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE-IX* December- 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

पहाड़ी कलम का आकर्षण कांगड़ा चित्रशैली

नीलम
असि0 प्रो0 व विभागाध्यक्ष,
चित्रकला विभाग,
श्रीमती बी0डी0 जैन, गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज,
आगरा कैण्ट, आगरा।

सारांश

पहाड़ी चित्रकला क्षेत्रीय दृष्टिकोण से अपनी अलग पहचान रखती है ऊँचे पहाड़ों से गिरते झरने कल–कल करती मधुर आवाज़, सुन्दर वृक्ष चारो तरफ हरियाली ही हरियाली शुद्ध वातावरण का अनोखा संगम अगर कहीं नज़र आती है तो पहाड़ों पर बसी कुदरती छटा है जिसका वर्णन पहाड़ी क्षेत्रों में बसे चित्रकारों ने अपनी कलम से कैनवास पर अंकित किया है, क्योंकि पहाड़ी चित्रकला की उपशैली कागड़ा शैली में यह दृश्य सहज सुलभ थे इसी कारण यहाँ कलाकार ऐसा मनोहारी चित्रण करने में सफल रहा है पश्चिमी हिमालय के अनेक राज्यों में कांगड़ा राज्य का प्रमुख स्थान है और इसके उत्थान और पतन का अपना एक इतिहास रहा है। यहाँ के राजा संसार चन्द जो एक राजनैतिक ज्ञाता के साथ–साथ कला प्रेमी भी थे। उन्हीं के शासन में पनपी कांगड़ा घाटी की कला में नारी सौन्दर्य का अनुपम चित्रण हुआ है मानव आकृति के सुडौल पन व गोलाई, भाव भंगिमा, मुख मण्डल, अंग प्रत्यंग हस्त मुद्राओं का चित्रण बड़ी कुशलता पूर्वक हुआ तथा मानव भावना के अनुकूल पशु–पक्षी प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण संयोग एवं यौवन के प्रतीक के रूप में किया गया है। विशेषकर अतिगोवन्द के चित्रों में प्रकृति की सारी सौन्दर्यता का दर्शन दिखाई पड़ता है।

मुख्य शब्द : पहाड़ी रियासत, कागड़ा घाटी, पहाड़ी चित्रकला का आकषर्ण, कांगड़ा, कांगड़ा चित्रों में प्राकृतिक सौन्दर्य,''कांगड़ा चित्रशैली'' राजा संसार चन्द, कागड़ा कला।

प्रस्तावना

सम्पूर्ण पहाड़ी कला के इतिहास में कांगड़ा शैली एक सर्वोच्च उपलब्धि रही हैं। भारतीय संस्कृति को व्यापक रूप से मुखरित करने वाली इस शैली में श्रृंगार के पक्षों का अदभुत चित्रण है, लघु आकार में बनाये गये कांगड़ा शैली के चित्र अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण बहुत अधिक लोकप्रिय हुए और देश–विदेश के विभिन्न संग्रह में इनको सम्मान मिला इस कलागत सौन्दर्य के प्रस्तुतिकरण का इतिहास अत्यंत विराट है जिसकी एक सुदीर्ध परम्परा चिरकाल से दिखाई देती है। इस इतिहास को गढ़ने मे किन–किन शासकों, कलाकारों, भिक्षुओं एंव अधिकारियों का सहयोग रहा तथा इसकी परम्परागत शैली क्या थी इसी का विस्तृत विवरण इस शोधपत्र में देने का प्रयास किया गया है।

शोध पत्र का उद्देश्य

कांगड़ा शैली में भक्ति, काव्य एवं रीति काव्य सम्बन्धि चित्रों के अंकन से अवगत कराना व पहाड़ी रिहासत में पनपी कला को शब्दों का रूप देते हुये उसे परिभाषित करना।

शोध विषय क्षेत्र

पहाड़ी राज्यों की स्थापना सातवीं और आठवीं शताब्दी में राजपूत युवराजों ने अपने बाहुल्य से मुगल साम्राज्य के आने से पूर्व प्रारम्भ की और यहीं पर कुछ राजपूताना राज्य स्थापित किये। मैदानी क्षेत्र में अफगानों व मुगलों का जब साम्राज्य स्थापित हो गया था तब सत्रहवीं शताब्दी में वैष्णव धर्म का विकास पहाड़ी राज्यों में हुआ और यहाँ हिन्दू धर्म की सुरक्षा भी हुई।[1] इन पहाड़ों की हरी भरी वादियों में फली–फूली पहाड़ी चित्रकला की परम्परा पहाड़ी कलम के नाम से प्रसिद्ध है इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मुगल चित्रकला ने राजस्थान की भाँति पहाड़ी चित्रकला को उभारने में अपना पूर्ण सहयोग दिया है।

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पंजाब और हिमालय की सुरम्य घाटियों में प्रस्फुटित होने वाली यह कला शैली मुगल शैली से सर्वथा भिन्न, भावपूर्ण और कलात्मक थी जो विस्तृत आयाम में विकसित हुई। यहाँ की कला कृतियों में पहाड़ी, वैभव उसका सौन्दर्य, सौकुमार्य तथा वहाँ की चिरयोवन सुन्दरता मुखरित हो उठी। यहीं पर आकार धर्म और संस्कृति को पोषित करने वाले अभिव्यक्ति के तीनों माध्यम – चित्रकला, काव्य और संगीत का अनुपम

समन्वय दिखाई पड़ता है जो चिर–नवीन है और यही है पहाड़ी चित्रकला की अपूर्व उपलब्धि।[2] 17वीं सदी में सम्राट औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता एवं ललित कलाओं के प्रति उदासीनता के कारण और 18वीं सदी के मध्य तक मुगल साम्राज्य के कमजोर हो जाने के कारण दिल्ली दरबार में कालाकारों की उपेक्षा होने लगी।[3] और औरंगजेब द्वारा चित्रालय को बन्द करा दिये जाने तथा चित्रकारों को खदेड़ देने के चित्रकला का ह्रास होने लगा। जो मुगल सामज्य लम्बे समय से कला का पोषक रहा था वह अब कला के विघटन और विनाश का कारण बन गया इसके चलते दिल्ली दरबार के कलाकार काम की तलाश में इधर–इधर भटकने लगे जिससे उनको राजश्रय प्राप्त हो सके। इस तरह कुछ कलाकार राजश्रयों में या महानगरों में पहुँचे जहाँ उन्हें उनकी कृतियों के लिये उचित सम्मान, सरंक्षण एवं पुरस्कार मिल सकता हो जैसे ही जहाँ उन्हें अनुकूल वातावरण मिलता गया वैसे–वैसे वह वहाँ बसते चले गये। परन्तु कुछ श्रेष्ठ कलाकार आश्रय की खोज में पंजाब तथा हिमालय की सुरम्य घाटियों की पहाड़ी रिहासतों जैसे–जसरोटा (बसौलहली), भरपुर, गलेर, कोट, कांगड़ा, चम्बा, जम्बू, कूल्लू, मड़ी आदि राज्यों के राजाओं के सम्पर्क में आये और यहीं के हो गये क्योंकि उन्हें यहाँ पहले की अपेक्षा अधिक उन्मुक्त तथा स्वच्छ वातावरण मिला ओर प्रकृति का बदलता पल–पल रूप एवं यहाँ के सौन्दर्य ने हर कलाकार का मन मोह लिया।[4] जिससे यह सभी कलाकार यहीं रम गये। ये सभी शरणार्थी चित्रकार धीरे–धीरे इन प्रदेशों में बसते चले गये तथा उनकी कला आश्रयदाता की रूचियों, अपेक्षाओं तथा स्थानीय विशेषताओं के अनुरूप उन्नति करती गयी। इस तरह इस पहाड़ी प्रदेश में अलग–अलग स्थानों में बसने वाले कलाकारों ने अपनी–अपनी निजी एवं स्थानीय विशेषताओं से उस स्थान विशेष के नाम पर विभिन्न शैलियों का विकास किया।

इसी समय कांगड़ा शैली में सुन्दरतम हृदयस्पर्शी कलाकृतियों का सृजन हुआ जिसकी गणना विश्व की श्रेष्ट कृतियों में हुई। कांगड़ा घाटी की शान्त, एकान्त प्रकृति से प्ररेणा प्राप्त कर वहाँ के कलाकारों ने जिन कृतियों का निर्माण किया उनका चिरस्थायी महत्व है। कांगड़ा घाटी के आरम्भिक इतिहास के बारे में प्रमाणिक सामग्री का अभाव है। वहाँ के सामाजिक जीवन में जब शासन व्यवस्था का आरम्भ हुआ उस प्राचीन युग में वहाँ अनेक कुरीतियाँ थी, जो सामन्तों, राजाओं तथा ठाकुरों के बीच बटी हुई थी। वे अपनी सीमाओं को बढ़ाने के लिये तथा अपना बल प्रदर्शन करने के उद्देश्य से आपस में लड़ा करते थे और कभी–कभी बाहर से आकर कोई शक्तिशाली क्षत्रिय राजा इन सामन्तों तथा ठाकुरों को पराजित करके उन्हें अपने अधीन कर लेता था और वे उसको बाहर कर दिया करते थे।[5] कटोच राजवंश की कीर्ति को उच्च स्थान पर पहुँचाने वाले महाराज संसार चन्द का नाम इतिहास में अमर है। वह महान योद्धा, कुशल राजनीतिज्ञ और प्रजा का वास्तविक स्वामी था, उसके दरबार में चित्रकारों का जमघट लगा रहता था, चित्रकार प्रतिदिन अपने चित्र बनाकर संसार चन्द को दिखाते थे और वह उनका निरीक्षण करता था और उन्हें परामर्श देता था। नागौद दुर्ग के निकट नर्मदेश्वर मन्दिर का निर्माण महाराज संसारचन्द की महारानी के कला प्रेम का साक्षी है। कांगड़ा शैली के कलाकारों का यह सौभाग्य था कि संसार चन्द अपने परवर्ती राजाओं से कहीं अधिक कला प्रेमी था उसे अपने राजनीतिक कार्यों से कहीं ज्यादा रूचि कांगड़ा चित्र शैली के विकास में थी।[6] कटोच राजवंश के लगभग बीस उत्तराधिकारीयों के बाद सन् 1751 ई0 में घमण्ड चन्द कांगड़ा की गद्दी पर बैठा। नाम के अनुसार ही उसका स्वभाव भी था इस समय तक मुगलों की शक्ति क्षीण हो चुकी थी जिसका लाभ उठाकर घमण्ड चन्द ने उस समस्त क्षेत्रों को अपने अधिकार में कर लिया जो उसके पूर्वजों के हाथ से निकल गये थे। राजा घमण्ड चन्द के बाद उसका पुत्र तेग चन्द के तीन पुत्रों में संसार चन्द सबसे बड़ा पुत्र था। जो आगे कांगड़ा की गद्दी का स्वामी बना।[7] सम्पूर्ण पहाड़ी कला के इतिहास में कांगड़ा शैली एक सर्वोच्च उपलब्धि रही है। भारतीय संस्कृति को व्यापक रूप से मुखरित करने वाली इस शैली में श्रंगार के पक्षों का ऐसा मनोहारी चित्रण हुआ है कि दर्शक ठगा सा, उस अपूर्व रूप राशि को देखता रह जाता है। रंगों के माध्यम से प्रेम का ऐसा अनूठा अंकन शायद ही कहीं देखने को मिले। काव्य का चित्रकला में रूपान्तर ही कांगड़ा का अद्वितीय गुण है। काव्य की पीठिका में प्रवाहमान लयात्मक रेखाओं ने कांगड़ा कला को गेयता दी है इसे सहज ही शान्त संगीत कहा जा सकता है।[8] इन चित्रों में अंकित आकृतियाँ सहज मानवीय, सुन्दर एवं आकर्षक है और इस बात का प्रमाण देती है कि वे इसी धरती की है जहाँ कलाकार अपना जीवन यापन करता है। अपने लोगों से, अपनी धरती से कांगड़ा कलाकार का लगाव उसकी रचनाओं में उभर आया है। कांगड़ा घाटी का प्राकृतिक सौन्दर्य, वहाँ के पेड़–पौधे,पशु–पक्षी, ऋतु–पर्व, बिजली–बादल, वर्षा–फुहार, सर्योदय–सूर्यास्त आदि दृश्यों का सुन्दर अंकन शायद इसीलिए संभव हो सका है कि चित्रकारों के लिए कांगड़ा घाटी में ये सब दृश्य सहज सुलभ थे। महा नायक श्री कृष्ण की विविध लीलाओं को उजागर करने वाली कांगड़ा शैली का आनन्द प्रणय प्रसंगों तथा नारी, सौन्दर्य की राचनात्मकता में निहित है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस शैली के कलाकारों का एक मात्र उद्देश्य नारी सौन्दर्य तथा उसकी प्रणय संवेदना को चित्र रूप में प्रस्तुत करना था, और जिसमें वे पर्याप्त सफल हुये। अनेक चित्रों में कृष्ण को पीताम्बर पहने तथा मोर मुकुट धारण किये हुये सर्वथा भारतीय परिवेश में चित्रित किये दर्शाया गया है।[9]

राजा संसार चन्द के सरंक्षण एवं प्रोत्साहन के कारण कलाकारों ने हिन्दू शास्त्रों, विशेषतः कृष्ण कथा से सम्बद्ध धर्म ग्रन्थों, पौराणिक प्रसंगों और काव्य ग्रन्थों पर आधारित चित्रांकन किया। श्री कृष्ण की यशोगाथा को चित्र विस्तार देने वाले कांगड़ा शैली के चित्रकारों ने जयदेव कृत गीत गोविन्द, केशवदास कृत ''रसिकप्रिया' तथा बिहारी कृत ''बिहारी सतसई'' आदि ग्रन्थों पर आधारित अनेक चित्रों का अत्यन्त सुन्दर तथा मनोहारी ढंग से अंकन किया है। प्रेम का ऐसा भावमय, लयात्मक, गेयतापूर्ण तथा कलात्मक चित्रण कहीं ओर देखने को नहीं मिल सकता ये चित्र इतने सुरिचिपूर्ण तथा अलौकिक प्रेम

को व्यक्त करते हैं जिनमें कहीं भी कुत्सित भावना का चित्रण नहीं है। कांगड़ा की लघु चित्र शैली में बनी कलाकृतियाँ अपनी चटक रंग योजना, लयपूर्ण रेखांकन तथा सहज आकर्षण के कारण मानवीय चेतना की कृतियाँ बन गयी। रंगों का संयोजन, रेखाओं का सुकुमार इन चित्रों से हर क्षण झांकता है। कांगड़ा कला वह कला है जिसमें ऐन्दिक सुख के सभी साधन उपस्थित है। यह न तो पूर्णतः अध्यात्मिक कला है और न ही निषेधात्मक। इसमें इन्द्रीय जनित आध्यात्मिकता का सुखद समिश्रण हुआ है।[10]

निष्कर्ष

भारतीय लघु चित्र शैलियों में कांगड़ा शैली का स्थान अन्यतम हैं यह सत्य है कि कांगड़ा शैली पहाड़ी चित्रशैली का गौरव है। इस शैली के कलाकारों ने अपनी कला में जीवन के आनन्द का सारतत्व अंकित किया है रंगों तथा आकृतियों में बनी हुई एक समरसता इस शैली को और समर्थ बना देती है। प्रवाहमान रेखाओं तथा दमकते रगों के सामंजस्य से कांगड़ा के चित्रकारों ने चित्र फलक पर मानवीय संवेदना और जीवन संगीत को पर्याप्त मुखर बना दिया है। मानकृतियों से लेकर प्रकृति चित्रण में यहाँ का कलाकार मन और आत्मा से जिया है चारों तरफ हरी भरी वादियों का अंकन हर किसी का मन मोह लेने पूर्णतः सक्षम है। चित्रों को देखकर हर किसी का मन प्रफ्फुल्लित हो उठता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अविनाश बहादुर वर्मा : भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ संख्या–216
2. डॉ0 श्याम बिहारी अग्रवाल : भारतीय चित्रकला का इतिहास (मध्यकालीन) पृ0–141
3. डॉ0 श्याम बिहारी अग्रवाल : भारतीय चित्रकला का इतिहास (मध्यकालीन) पृ0–141
4. डॉ0 श्याम बिहारी अग्रवाल : भारतीय चित्रकला का इतिहास (मध्यकालीन) पृ0–141
5. गैरोला वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 – 191
6. प्रेमचन्द गोस्वामी : भारतीय कला के विविधरूप पृ0 – 85
7. एस.एस.रूंधावा : कांगड़ा पैंटिंग्स ऑफ भागवत पुराण– 185
8. डॉ0श्याम बिहारी अग्रवाल – भारतीय चित्रकला का इतिहास 153
9. डॉ0श्याम बिहारी अग्रवाल – भारतीय चित्रकला का इतिहास 152 व 155
10. प्रेमचन्द गोस्वामी : भारतीय कला के विविध रूप पृ– 86